Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ

(सूरः अन्फ़ाल : 164)

अनुवाद : और जान लो कि तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी औलाद केवल एक आज़माईश हैं और यह (भी) कि अल्लाह के पास एक बहुत बड़ा अज्र है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-22-23

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

11-18 जुल्कादा 1444 हिज्री कमरी, 8 अहसान 1402 हिज्री शम्सी, 01-08 जून 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

जितना अधिक कोई दौलतमंद है उतना ही अधिक वह मुहताज है सिवाए उस शख़्स के जो माल से इस प्रकार ख़र्च करे

(2388) हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अहद पहाड़ को देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह (पहाड़) मेरे लिए सोना बनादिया जाए तो भी मुझे पसंद नहीं कि इस में से एक दीनार मेरे पास तीन दिन से अधिक रहे, सिवाए उस दीनार के जो क़र्ज़ा अदा करने के लिए रखों। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जितना अधिक कोई दौलतमंद है उतना ही ज़ियाद वह मुहताज है सिवाए उस शख़्स के जो माल इस तरह ख़र्च करे।

إِنَّ الْأَكْثَرِيْنَ هُمُ الْأَقَلُّوْنَ: हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब फ़रमाते हैं : यह वाक्य जो मा अल्कलम में से है और उसका अर्थ यह है कि दौलतमंदी रुपया जमा करने में नहीं है बल्कि अक्सर दौलतमंद अख़लाक़ फाज़ला से महरूम होने की वजह से तही-दस्त हैं। दौलतमंदी दौलत जमा करने में नहीं बल्कि दाएं बाएं ख़र्च करने में है अर्थात दीनी और दुनियावी जरूरतों में ख़र्च करने से दौलत की ग़रज़ पूरी होती है। वह शख़्स जिसने रुपया जमा रखा और हुक़ूक़ की अदायगी में ख़र्च नहीं किया, वही सबसे अधिक क़ल्लाश है परंतु जिस व्यक्ति ने अपनी दौलत से हुक़ूक़ अदा किए वही दरअसल ग़नी है कि उसने दौलत की असल ग़रज़ हासिल कर ली। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दौलत से मुताल्लिक़ यह नज़रिया ग़ायत दर्जा हकीमाना है।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् इस्तक़राज़, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

यदि मतभेद हो, इत्तिहाद न हो तो फिर बेनसीब रहोगे
प्रथम ख़ुदा की तौहीद इख़तेयार करो, दूसरे आपस में मुहब्बत और हमदर्दी ज़ाहिर करो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

जमाअत के आपसी सर्व सहमति और प्रेम पर में पहले बहुत दफ़ा कह चुका हूँ कि तुम आपस में इत्तफ़ाक़ रखो और इजतेमा करो। ख़ुदा तआला ने मुस्लमानों को यही तालीम दी थी कि तुम वजूद एक रखो अन्यथा हवा निकल जाएगी। नमाज़ में एक दूसरे के साथ जुड़ कर खड़ा होने का हुक्म इसीलिए है कि आपस में एकता हो। बिजली की ताक़त की तरह एक की ख़ैर दूसरे में सरायत करेगी। अगर इख़तेलाफ़ हो, एकता न हो तो फिर बेनसीब रहोगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि आपस में मुहब्बत करो और एक दूसरे के लिए ग़ायबाना दुआ करो। अगर एक शख़्स ग़ायबाना दुआ करे तो फ़रिश्ता कहता है कि तेरे लिए भी ऐसा ही हो। कैसी आला दर्जा की बात है। अगर इन्सान की दुआ मंज़ूर न हो तो फ़रिश्ते की तो मंज़ूर होती है। मैं नसीहत करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि आपस में इख़तेलाफ़ न हो।

मैं दो ही मसले लेकर आया हूँ। अव्वल ख़ुदा की तौहीद इख़तेयार करो। दूसरे आपस में मुहब्बत और हमदर्दी ज़ाहिर करो। वह नमूना दिखाओ कि ग़ैरों के लिए करामत हो। यही दलील थी जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु में पैदा होती थी। كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ (आले ईमरान आयत : 104) याद रखो तालीफ़ एक एजाज़ है। याद रखो जब तक तुम में प्रत्येक ऐसा न हो कि जो अपने लिए पसंद करता है वही अपने भाई के लिए पसंद करे, वह मेरी जमाअत में से नहीं है। वह मुसीबत और बला में है। इस का अंजाम अच्छा नहीं

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 457 मुद्रित 2018 कादियान)

★ ★ ★

हर व्यक्ति के माल में उसके रिश्तेदारों, गरीबों और मुसाफ़िरों का हक़ है
किसी का माल उसका ख़ालिस माल नहीं होता बल्कि उस में दूसरों के हुक़ूक़ शामिल होते हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत बनीइसराईल आयत नंबर : 27 وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में बताया गया है कि प्रत्येक शख़्स के माल में रिश्तेदारों, गरीबों और मुसाफ़िरों का हक़ है। रिश्तेदार इन्सान की कमाई में कई तरह मदद का माध्यम होते हैं। इस लिए उसके माल में इन सब का हक़ होता है उदाहरणतः माता पिता ने एक बेटे को पढ़ा दिया और वह किसी उच्च पद पर पहुंच गया और बाक़ी भाई इलम से महरूम रहे तो इस ओहदादार के माल में बाक़ी भाईयों का भी हक़ है क्योंकि जिस रुपय से इस को तालीम दिलाई गई थी इस में इन सब का हक़ था।

मसाकीन और इब्ने-सबील का भी अल्लाह तआला ने हक़ क़रार दिया है और दूसरी जगह खोल कर भी बताया है وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ (ज़ारियात रुकू : 1) कि इन्सान के अम्वाल में सायल इत्यादि का भी हक़ होता है। मसाकीन का हक़ क़रार देने की एक तो यह वजह है कि दुनिया में अमीर ग़रीब बदलते रहते हैं । जो आज ग़रीब हैं कभी अमीर थे और जो आज अमीर हैं कभी ग़रीब थे और इस वक़्त के अमीरों ने इन से हुस्न-ए-सुलूक किया था। अतः सारी दुनिया को अगर मजमूई निगाह से देखा जाए तो किसी का माल उसका ख़ालिस माल नहीं बल्कि इस में दूसरों के हुक़ूक़ शामिल हैं। दूसरी वजह उसकी यह है कि दुनिया की सब साहूलतें अल्लाह तआला ने बनीनौ इन्सान के लिए बहैसियत जमात पैदा की हैं न कि ज़ैद या बकर के लिए। अतः अगर ज़ैद और बकर किसी वजह से अधिक मालदार हो गए हूँ तो इस से उन बाक़ी लोगों का हक़ बातिल नहीं हो जाता जो दुनिया की चीज़ों की मिल्कियत में ज़ैद और बकर के साथ बराबर के शरीक हैं। निसन्देह बाव्जाह ख़ास मेहनत के ज़ैद या बकर का ज़ायद हक़ इस्लाम तस्लीम करता है लेकिन उनको मालिक बिला शिरकत ग़ैर नहीं करता।

मुसाफ़िरों का हक़ इस तरह कि जब ये दूसरी जगह की तरफ़ जाता है तो वह उस से हुस्न-ए-सुलूक करते हैं। अतः दूसरे मुक़ाम के मुसाफ़िर की ख़िदमत करना उस का फ़र्ज़ है ता हक़ ज़यााफ़त अदा होता रहे। इब्ने-सबील के हक़ के संबंध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम किसी बस्ती में जाओ तो तीन दिन तक की ज़यााफ़त का तुम को हक़ है। सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसू-

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"हक़ीक़ी तक़्वा के साथ जाहिलियत जमा नहीं हो सकती।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

यह अह्द करना चाहिए और दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी कमज़ोरियों को क्षमा फ़रमाते हुए
हम पर रहमत फ़रमाते हुए हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी ज़िंदगियों को मुस्तक़िल उस तरीक़ पर चलाने वाले बन जाएं जो अल्लाह तआला हम से चाहता है

असल चीज़ तक़्वा है, असल चीज़ मुस्तक़िल मिज़ाजी से ख़ुदा तआला के अहकाम पर अमल करना है, असल चीज़ ख़ुदा तआला की ख़शीयत और उसकी रज़ा का हुसूल है

जब हम ख़ुद अपनी ज़िंदगियों को तक़्वा पर चलाने और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए गुज़ार रहे होंगे
तो हम अपने बच्चों और अपनी नसलों के सामने भी वह नमूने पेश कर रहे होंगे जिस से नेकियों की जाग एक नसल से दूसरी नसल को लगती चली जाती है

रमज़ान के महीने में तक़्वा के मयारों को हासिल करने के लिए अल्लाह तआला ने एक तर्बीयती माहौल और इंतेज़ाम हमारे लिए मुहय्या फ़रमाया है
लेकिन वह इसलिए कि प्रत्येक रमज़ान के बाद हम तक़्वा के अगले और बुलंद मयारों को हासिल करते चले जाएं, न इसलिए कि रमज़ान के बाद हम वापस अपने निचले मयार पर चले जाएं

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि यह ज़माना तो खासतौर पर शैतान के हमलों का ज़माना है, अपने तमाम-तर कार्यों और मकरों और हथियारों से शैतान हमले कर रहा है, ऐसे ख़ौफ़नाक हमले हैं कि जिसकी मिसाल पहले नहीं मिलती थी, अतः ऐसे हालात में ख़ुदा तआला की तरफ़ खासतौर पर झुकने की ज़रूरत है

हर मुश्किल से और प्रत्येक बला और मुसीबत से बचने का यह नुस्ख़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया है कि
मेरी तालीम के मुताबिक़ ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की पनाह में आने की कोशिश करो और फिर देखो अल्लाह तआला तुम्हें किस तरह शैतान और दज्जाल के हमलों बचाता है

"दुआ में एक चुंबक का प्रभाव होता है वह फ़ैज़ और फ़ज़ल को अपनी तरफ़ खींचती है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"याद रखो यह नमाज़ ऐसी चीज़ है कि इस से दुनिया भी सँवर जाती है और दीन भी।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

यह हमारी ख़ुशक़िसमती होगी कि हम अपनी इबादतों के मयार ऊंचे करते हुए, अपनी हालतों को दरुस्त करते हुए
इन लोगों में शामिल हो जाएं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शमूलियत का हक़ अदा करने वाले हैं

"चाहिए कि तुम्हारा दिन और तुम्हारी रात ग़रज़ कोई घड़ी दुआओं से ख़ाली न हो।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पर मआरिफ़ इर्शादात की रोशनी में तक़्वा की तशरीह और इस के हुसूल की तलक़ीन

तीन दिन या चार दिन या हफ़्ते की दुआएं नहीं, मुस्तक़िल दुआएं करें
(पाकिस्तान और दुनिया-भर में मौजूद अहमदियों के लिए दुआ की तलक़ीन)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 अप्रैल 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

आज रमज़ान का आख़िरी जुमा है। रमज़ान गुज़र गया और बहुत से ऐसे लोग होंगे जिन्हों ने रमज़ान में इबादत और अपने अंदर ख़ास तबदीलियां पैदा करने के लिए मंसूबे बनाए होंगे लेकिन उन पर जिस तरह सोचा था अमल नहीं कर सके। कई लोग इस तरह मुझे ख़त लिखते हैं। और आज रमज़ान का आख़िरी दिन भी चंद घंटों बाद ख़त्म होने वाला है।

जुमा का दिन वह बाबरकत दिन है जिस में ऐसी घड़ी आती है जब दुआ की क़बूलियत का ख़ास वक़्त होता है।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् जुमा, बाब सात अल्लती फ़ी यौम अल् जुमा, हदीस 935)

अतः अगर हमारे रमज़ान के दिन इस तरह नहीं भी गुज़रे जिस तरह हमारी ख़ाहिश थी या जिस तरह एक मोमिन के गुज़रने चाहिए थे तो फिर भी हमें आज इस बक़ीया वक़्त में यह अह्द करना चाहिए और दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला

हमारी कमज़ोरियों से सिर्फ-ए-नज़र फ़रमाते हुए, हम पर रहमत फ़रमाते हुए हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी ज़िंदगियों को मुस्तक़िल उस तरीक़ पर चलाने वाले बन जाएं जो अल्लाह तआला हम से चाहता है।

अल्लाह तआला तो बड़ा मेहरबान है। उसने हमारी दुआओं की क़बूलियत के लिए यह नहीं फ़रमाया कि रमज़ान के महीने में जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें दुआएं क़बूल होती हैं बल्कि यह जुमा के दिन की उमूमी ख़ुसूसियत बयान फ़रमाई है। अतः अगर आज हम अपनी दुआओं में यह अह्द करें कि हम इस रमज़ान के बाद भी अपने तक़्वा के मयार को बढ़ाते रहेंगे, उस के लिए कोशिश करेंगे, अल्लाह तआला के क़ुरब को हासिल करने की कोशिश करते रहेंगे, आइन्दा जुमा तक अपनी इबादतों को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करते रहेंगे, फिर प्रत्येक जुमा के दरमयानी अरसा को अपनी इबादात और नेक-आमाल से सजाने की कोशिश करते रहेंगे, दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे, अगले रमज़ा तक हम इस प्रोग्राम को पूरा करने की कोशिश करते रहेंगे जो हमने अपने अंदर पाक तबदीली पैदा करने के लिए रमज़ान के महीने के लिए बनाया था और किसी वजह से इस पर अमल नहीं कर सके तो यह वह अमल है जो हक़ीक़ी तक़्वा पैदा करता है।

और जब हम ख़ालिस हो कर अपनी इबादात और अपने आमाल अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर बजा ला रहे होंगे तो फिर अल्लाह तआला जो सब मेहरबानों से अधिक मेहरबान है, रहमान है, रहीम है वह हमें इन बरकात से नवाज़ता रहेगा जिन पर हमने इस रमज़ान में भी कुछ हद तक अमल किया। अतः असल चीज़ तक़्वा है। असल चीज़ मुस्तक़िल मिज़ाजी से ख़ुदा तआला के अहकाम पर अमल है

असल चीज़ ख़ुदा तआला की ख़शीयत और उस की रज़ा का हुसूल है। अगर यह है और हम वापस उस दुनियादारी की ज़िंदगी में नहीं चले गए जहां दीन दुनिया पर मुक़द्दम होने को हम भूल जाएं तो जो भी और जैसी भी हमने इबादतें और अपनी इस्लाह की कोशिश इस रमज़ान में की है अल्लाह तआला उन्हें क़बूल फ़रमाते हुए हमें नवाज़ता रहेगा। अतः यह बुनियादी नुक्ता है जो हमें हर वक़त सामने रखना चाहिए। इस उद्देश्य का हुसूल प्रत्येक अहमदी को हर वक़त अपने सामने रखना चाहिए और जब हम ख़ुद अपनी ज़िंदगियों को तक़्वा पर चलाने और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए गुज़ार रहे होंगे तो हम अपने बच्चों और अपनी नसलों के सामने भी वह नमूने पेश कर रहे होंगे जिनसे नेकियों की जाग एक नसल से दूसरी नसल को लगती चली जाती है।

हमने अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ की बैअत की है और जिन शरायत पर बैअत की है उनका ख़ुलासा ही यह है कि हमेशा तक़्वा पेश-ए-नज़र रहेगा और इस की बार-बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें तलक़ीन फ़रमाई है ताकि हमारी ज़िंदगियों में वे इन्क़िलाब पैदा हो जाए जो प्रत्येक साल सिर्फ एक महीने का इन्क़िलाब न हो या साल में सिर्फ एक महीना इस इन्क़लाब को पैदा करने की कोशिश न हो। बेशक रमज़ान के महीने में तक़्वा के मयारों को हासिल करने के लिए अल्लाह तआला ने एक तर्बीयती माहौल और इंतेज़ाम हमारे लिए मुहय्या फ़रमाया है लेकिन वह इसलिए कि प्रत्येक रमज़ान के बाद हम तक़्वा के अगले और बुलंद मयारों को हासिल करते चले जाएं। न इसलिए कि रमज़ान के बाद हम वापस अपने निचले मयार पर चले जाएं।

अतः जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तक़्वा के मयारों को ऊंचा करने और हमारी इस्लाह के लिए भेजे गए हैं और उसकी बार-बार आप हमें तलक़ीन फ़रमाई है। इसलिए एक अवसर पर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "अतः मैं भेजा गया हूँ कि ता सच्चाई और ईमान का ज़माना फिर आवे और दिलों में तक़्वा पैदा हो। अतः यही कार्य मेरे वजूद की इल्लत-ए-ग़ाई हैं।" यही मेरे आने का उद्देश्य है। फ़रमाया "मुझे बतलाया गया है कि फिर आसमान ज़मीन से नज़दीक होगा बाद उसके कि बहुत दूर हो गया था।"

(किताबुल् बरिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 293-294 हाशिया)द

अतः यह वह बातें हैं जिन्हें हमेशा हमें अपने सामने रखना चाहिए। आप अलैहिस्सलाम ज़माना जो ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत पर क़ायम होते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ ता क़ियामत रहने वाला ज़माना है आप मानने वाले ही हैं जिन्हों ने सच्चाई पर क़ायम रहते हुए अपने ईमानों की हिफ़ाज़त करनी है और उसके ऊंचे मयार हासिल करने हैं और यह केवल एक महीने की नेकियों या नेकियां करने की ख़ाहिश या एक महीने की इबादतों और इबादतों में ख़ास शग़ाफ़ या मस्जिदों को एक महीने के लिए खासतौर पर आबाद करने से हासिल नहीं होगा बल्कि जब सच्चाई को माना है, जब आप अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और महदी माहूद मान कर बैअत की है तो ईमान के मयारों को ऊंचा करने की हमें ख़ास कोशिश चाहिए।

और जब हम ऐसे हो जाऐंगे तो उन लोगों में शामिल हो जाऐंगे जिनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ख़ास ताल्लुक़ है, जिन्हों ने बैअत के उद्देश्य को समझा है और उसका हक़ अदा करने की कोशिश की और यही वे लोग होंगे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को फ़रमाया कि "मैं तेरे साथ और तेरे तमाम प्यारों के साथ हूँ।" (तज़करः, पृष्ठ 630 ऐडीशन 4)किसी का प्यारा होने के लिए बुनियादी शर्त तो यही है और होनी चाहिए कि उसकी बातों पर अमल किया जाए और उसकी ख़ाहिशात के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारी जाए। अतः यहां अल्लाह तआला ने ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्यारों के साथ होने का ऐलान फ़र्मा दिया है। अतः जब अल्लाह तआला किसी के साथ हो जाए तो फिर उसे और किसी चीज़ की क्या हाजत रह जाती है

अतः हम में से वे लोग ख़ुश-क़िस्मत हैं जिन्हों ने अपने ईमान के इस मयार को हासिल कर लिया जहां हमेशा के लिए उनको अल्लाह तआला का साथ मिल गया और उस की तो दुनिया-ओ-आक़िबत सँवर गई जिसको अल्लाह तआला का साथ मिल जाए।

अतः हमें अपने अंदर तक़्वा पैदा करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्देश्य को पूरा करना है और यह उसी सूरत में होगा जब हम मुस्तक़िल मिज़ाज़ी से अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने की कोशिश करेंगे। आप इस इक़तेबास में यह भी फ़रमाया है कि फिर आसमान ज़मीन से नज़दीक होगा। और आसमान ज़मीन से नज़दीक उस वक़्त होगा जब हमें उस का फ़ैज़ पहुँचेगा। खुदा तआला उस वक़्त हमारे क़रीब आएगा जब क़ुरआन और सुन्नत की रोशनी में हम इस तरीक़ पर चलने वाले होंगे जिसको खोल कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने पेश फ़रमाया है। हम इन ख़ुश-क़िस्मत लोगों में शामिल होंगे जिन पर अल्लाह तआला के फ़ज़लों की बारिश होती है। जिनकी दुआओं को ख़ुदा तआला सुनता है।

जब यह नज़्ज़ारे हम अपनी ज़िंदगियों में देखेंगे तो दूसरों को भी एतेमाद के साथ यह दावत देंगे कि आओ! अगर तुम ख़ुदा तआला से ज़िंदा ताल्लुक़ पैदा करना चाहते हो, अपने ईमान को मज़बूत करना चाहते हो तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को क़बूल करो और यह केवल तक़्वा के मयार हासिल करने से होगा और यह उसी वक़्त होगा जब यह मयार हासिल होने के बाद हम इस पर मुस्तक़िल क़ायम होंगे और फिर अल्लाह तआला के फ़ज़लों के नज़्ज़ारे भी देखेंगे। अतः हम में से ऐसे लोग जो इस उसूल को समझ गए हैं और ज़िंदगी को नेकी और तक़्वा के मयार तक ले जाने वाले बन गए हैं या बनने की कोशिश कर रहे हैं वह अल्लाह तआला के फ़ज़लों के नज़्ज़ारे देखते रहेंगे। हम में से प्रत्येक यह नज़ारा देख सकता है अगर अपनी ज़िंदगी अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक़ तक़्वा की राहों पर चलने वाली बना ले।

हक़ीक़ी तक़्वा क्या है और इस पर चलने वाला कैसा होना चाहिए और इस के साथ अल्लाह तआला का क्या सुलूक होता है, इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हक़ीक़ी तक़्वा के साथ जाहिलियत जमा नहीं हो सकती।" अतः यह बुनियादी बात है कि मुत्तक़ी जाहिल नहीं हो सकता। हक़ीक़ी मुत्तक़ी इबादतगुज़ार होगा और साथ ही बंदों के भी हक़ अदा करने वाला होगा। अतः यह वह बुनियादी बात है जो हमें हमेशा सामने रखनी चाहिए। फिर फ़रमाया "हक़ीक़ी तक़्वा अपने साथ एक नूर रखती है जैसा कि अल्लाह जल्ला शानहु फ़रमाता है। يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ (अल् अनफाल : 30) (अल् हदीद : 29) अर्थात हे ईमान लाने वालो अगर तुम मुत्तक़ी होने पर साबित-क़दम रहो और अल्लाह तआला के लिए इत्तेका की सिफ़त में क़ियाम और इस्तिहकाम इख़तेयार करो तो ख़ुदा तआला तुम में और तुम्हारे ग़ैरों में फ़र्क़ रख देगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह अनुवाद तफ़सीरी फ़र्मा रहे हैं। "अल्लाह तआला के लिए इत्तेक़ा की सिफ़त में क़ियाम और इस्तहकाम इख़तेयार करो तो ख़ुदा तआला तुम में और तुम्हारे ग़ैरों में फ़र्क़ रख देगा। वह अंतर यह है कि तुमको एक नूर दिया जाएगा जिस नूर के साथ तुम अपनी तमाम राहों

में चलोगे। अर्थात वह नूर तुम्हारे तमाम अफ़आल और अक़्वाल और क़ुवा और हवास में आजाएगा। तुम्हारी अक़ल में भी नूर होगा और तुम्हारी एक अटकल की बात में भी नूर होगा और तुम्हारी आँखों में भी नूर होगा और तुम्हारे कानों और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे बयानों और तुम्हारी प्रत्येक हरकत और सुकून में नूर होगा और जिन राहों में तुम चलोगे वह राह नूरानी हो जाएँगी। उद्देश जितनी तुम्हारी राहें, तुम्हारे क़ुवा की राहें, तुम्हारे हवास की राहें हैं वे सब नूर से भर जाएँगी और तुम सरापा नूर में ही चलोगे।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 177-178)

अतः यह वह मुक़ाम है जो एक मोमिन को एक मुत्तक़ी को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

रमज़ान गुज़र भी गया तो तब भी हम उस मुक़ाम को हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। ख़ुश-क़िस्मत होंगे हम में से वह जो इस मुक़ाम को हासिल कर लें कि अल्लाह तआला का क़बज़ा हमारे प्रत्येक कथनी और करनी पर हो। हमारा प्रत्येक अमल अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए हो। हमारा चलना फिरना उठना बैठना ग़रज़ कि प्रत्येक अमल अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए हो। जब यह होगा तो फिर ही हम अल्लाह तआला के नूर से हिस्सा लेने वाले होंगे। दुनिया की चका-चौंद के बजाय हमारा उद्देश्य अल्लाह तआला की रज़ा का हुसूल होगा तब ही हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे। हम एक कोशिश के साथ अपना अह्द निभाने वाले होंगे। अगर यह पाक तबदीली हम अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाने की ख़ाहिश नहीं रखते और इस के लिए कोशिश नहीं करते तो हमारे दावे ग़लत हैं। हमें रमज़ान में आरिज़ी तौर पर की गई नेकियां भी फिर कोई फ़ायदा नहीं देंगी। अतः हमें हर वक़त इस सोच के साथ अपना मुहासिबा करना चाहिए कि क्या हम इस तक़्वा के हुसूल की नियमित कोशिश कर रहे हैं जिसका क़ुरआन-ए-करीम की आयत की रोशनी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है। अगर हम अपनी ज़िंदगियों को इस तरह ढालने की कोशिश कर रहे हैं तो यक़ीनन हम शैतान से मुक़ाबले के लिए भी तैयार हैं और शैतान के मुक़ाबले में अल्लाह तआला फिर हमारी मदद भी फ़रमाएगा और शैतान के प्रत्येक हमले को नाकाम-ओ-न-मुराद करेगा। शैतान ने तो फ़ी ज़माना हमें प्रत्येक तरफ़ से घेरा हुआ है और ख़ुदा तआला की मदद के बग़ैर उसके चंगुल से निकलना मुम्किन नहीं और ख़ुदा तआला की मदद तक़्वा पर चलने वालों के साथ है।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि यह ज़माना तो खासतौर पर शैतान के हमलों का ज़माना है। अपने तमाम-तर हिलों और मकरों और हथियारों से शैतान हमले कर रहा है। ऐसे ख़ौफ़नाक हमले हैं कि जिसकी मिसाल पहले नहीं मिलती थी। अतः ऐसे हालात में ख़ुदा तआला की तरफ़ खासतौर पर झुकने की ज़रूरत है।

टीवी हो या सोशल मीडीया हो या दूसरे प्रोग्राम हों या बच्चों के स्कूल हों या उनके प्रोग्राम हों प्रत्येक जगह शैतान ने दज्जाल के ज़रीया से एक ऐसा ख़ौफ़नाक माहौल पैदा कर दिया है जिससे ख़ुदा तआला की मदद के बग़ैर निकलना मुम्किन ही नहीं है

इस वक़्त सबसे अधिक फ़िक्र तो अपने बच्चों और अगली नसलों को दज्जाल और शैतान के हमलों से बचाने की है और इस की बहुत अधिक ज़रूरत भी है और इस के लिए प्रत्येक अहमदी माता पिता को, तमाम अहमदी माता पिता को कोशिश भी करनी चाहिए और जमाती निज़ाम को भी कोशिश करनी चाहिए।

इसलिए प्रत्येक अहमदी आक़िल बालिग़ को अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हुए अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए तक़्वा के आला मयारों को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए ताकि इस तरह दज्जाल का मुक़ाबला अल्लाह तआला की मदद से कर सकें। रमज़ान के बाद भी हमें relax नहीं हो जाना चाहिए आराम से बैठ नहीं जाना चाहिए बल्कि अपने क़ुरआन-ए-करीम के इलम को, दीन के इलम को बढ़ाने की ख़ास कोशिश करनी चाहिएता कि एक ख़ास माहौल हमारे घरों में मुस्तक़िल रहे।

अपनी इबादतों की हिफ़ाज़त करनी चाहिए। शैतान और दज्जाल के हमलों से बचने के लिए ख़ास दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए

शैतान के हीलों और मकरों के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "याद रखना चाहिए कि दज्जाल असल में शैतान के मज़हर को कहते हैं। जिसके अर्थ हैं राह-ए-हिदा-यत से गुमराह करने वाला। लेकिन आख़िरी ज़माना की निसबत पहली किताबों में लिखा है कि इस वक़्त शैतान के साथ बहुत जंग होंगे लेकिन आख़िर कार शैतान मग़लूब हो जाएगा।" यह उम्मीद भी दिला दी। तक़्वा पर चलते रहेंगे, मुक़ाबला करेंगे तो शैतान मग़लूब हो जाएगा। फ़रमाया "गौहर नबी के ज़माना में शैतान मग़लूब होता रहा है परंतु वह सिर्फ़ फ़र्ज़ी तौर पर था। हक़ीक़ी तौर पर इस का मग़लूब होना मसीह के हाथों से मुक़द्दर था और ख़ुदा तआला ने यहां तक ग़लबा का वादा दिया है कि جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (आल-ए-इमरान : 56) फ़रमाया है कि तेरे हक़ीक़ी ताबेदारों को भी दूसरों पर क़ियामत तक ग़ालिब रखूँगा।

अतः हक़ीक़ी ताबेदार बनने के लिए आप की तालीम पर अमल करने के लिए तक़्वा इख़तेयार करना होगा। अतः फ़रमाया "उद्देश्य शैतान इस आख़िरी ज़माना में पूरे ज़ोर से जंग कर रहा है मगर आख़िरी फ़तह हमारी ही होगी।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 60 ऐडीशन1984 ई. इं शा अल्लाह)

अतः शैतान और दज्जाल के हमलों से बचाने और फ़तह देने का वादा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी फ़रमाया है। आप भी दो तीन मर्तबा यह इलहाम हुआ लेकिन इस का हक़ीक़ी फ़ायदा उठाने वाले वही लोग होंगे जो आप अलैहिस्सलाम की हक़ीक़ी इताअत करने वाले हैं और आप अलैहिस्सलाम की तालीम पर अमल करने वाले होंगे। इस बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह तो सच्च है कि वह मेरे मुतबईन को" क़ियामत तक "मेरे मुनकिरों और मेरे मुख़ालिफ़ों पर ग़लबा देगा लेकिन गौरतलब बात यह है कि मुतबईन में प्रत्येक शख़्स केवल मेरे हाथ पर बैअत करने से दाख़िल नहीं हो सकता। जब तक अपने अंदर वह इत्तबा की पूरी कैफ़ीयत पैदा नहीं करता मुतबईन में दाख़िल नहीं हो सकता। पूरी पूरी पैरवी जब तक नहीं करता ऐसी पैरवी कि गोया इताअत में फ़ना हो जावे और नक़्श-ए-क़दम पर चले उस वक़्त तक इत्तबा का लफ़्ज़ सादिक़ नहीं आता।" फ़रमाया कि "इस से मालूम होता है कि ख़ुदा तआला ने ऐसी जमात मेरे लिए मुक़द्दर की है जो मेरी इताअत में फ़ना हो और पूरे तौर पर मेरी इत्तिबा करने वाली हो।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 299 ऐडीशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला ऐसी जमात तो देगा। वे हम हों या दूसरे लोग हों। आज हों या कल हों या पहले गुज़र चुके हैं या हम में से कुछ हों या अक्सरीयत हो। यह जमात तो आप मिलेगी। अल्लाह तआला का वादा है। अतः ये अलफ़ाज़ हमारे लिए बहुत हिला देने वाले हैं।

हमें अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है कि हमारी इत्तबा के मयार क्या हैं। क्या हम इन दुआओं के भी वारस बन रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमात और अपने हक़ीक़ी मानने वालों के लिए की हैं। क्या हम अल्लाह तआला के इन फ़ज़्लों को भी हासिल करने वाले बन रहे हैं जिन का वादा अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम के मानने वालों के लिए आप अलैहिस्सलाम से किया है। क्या हम तक़्वा के इन मयारों को हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अपनी जमात के अफ़राद में देखना हैं?

अगर नहीं तो फिर चंद दिन की दुआएं हैं। सिर्फ रमज़ान की दुआएं हैं और चंद दिन की इबादत और रोना हमें इन इनामात का मुस्तहिक़ नहीं बना देता जिनका वादा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमाया है :

फिर इस सिलसिला में आप कश्ती नूह में मज़ीद फ़रमाते हैं कि "वाज़िह रहे कि सिर्फ ज़बान से बैअत का इक़रार करना कुछ चीज़ नहीं है जब तक दिल की अज़ीमत" यानी इरादा और दुआ भी इस के साथ शामिल हो। अज़ीमत "से इस पर पूरा पूरा अमल न हो।" इरादा भी हो और दुआ भी हो उस के साथ फिर पूरा अमल हो। फ़रमाया "अतः जो शख़्स मेरी तालीम पर पूरा पूरा अमल करता है वह इस मेरे घर में दाख़िल हो जाता है जिसकी निसबत ख़ुदा तआला की कलाम में यह वादा है اِنِّيْٓ اُحَافِظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ अर्थात प्रत्येक जो तेरे घर की चार दीवारी के अंदर है मैं उस को बचाऊंगा।"

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 10)

अतः प्रत्येक मुश्किल से और प्रत्येक बला और मुसीबत से बचने का यह नुस्ख़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया है कि मेरी तालीम के मुताबिक़ ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की पनाह में आने की कोशिश करो

और फिर देखो अल्लाह तआला तुम्हें किस तरह शैतान और दज्जाल के हमलों से बचाता है बल्कि हमें इन हथियारों से भी अल्लाह तआला लैस कर देगा जिनके इस्तमाल से हम शैतान पर ग़लबा पाने वाले होंगे। न सिर्फ बचने वाले होंगे बल्कि उसको मारने वाले भी होंगे और शैतान को हमेशा के लिए दूर करने वाले और दज्जाल के हमलों से बचने वाले होंगे। उसे तबाह करने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया : "परंतु याद रखना चाहिए कि उसका मारना" यानी शैतान का मरना "केवल उसी क़दर नहीं है कि सिर्फ ज़बान से ही कह दिया जाए कि शैतान मर गया है और वह मर जाए बल्कि तुम लोगों को अमली तौर पर दिखाना चाहिए कि शैतान मर गया है। शैतान की मौत कथनी से नहीं बल्कि करनी से ज़ाहिर करनी चाहिए।" शैतान की मौत का सिर्फ मुँह से ऐलान न करते रहो बल्कि हमारा प्रत्येक फ़ेअल, हमारा प्रत्येक अमल, हमारी प्रत्येक हालत से इस बात का इज़हार हो रहा हो कि हम अपने शैतान को मार रहे हैं। फ़रमाते हैं "ख़ुदा तआला का वादा है कि आख़िरी मसीह के ज़माना में शैतान बिल्कुल मर जाएगा।" फ़रमाते हैं "जबकि शैतान प्रत्येक इन्सान के साथ होता है परंतु हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शैतान मुस्लमान हो गया था।" एक मिसाल है। संत ने हमारे सामने बयान फ़रमाई और अगर शैतान पर क़ाबू पाना है तो इस सुन्नत पर चलना हमारा फ़र्ज़ है। आप फ़रमाते हैं "इसी तरह ख़ुदा तआला का वादा है कि इस ज़माना में शैतान की बिल्कुल बेख़कुनी कर दी जाएगी। यह तो तुम जानते ही हो कि शैतान لَاحَوْلَ से भागता है।" لَاحَوْلَ पढ़ो शैतान भागता है" मगर वह ऐसा सादा-लौह नहीं कि सिर्फ ज़बानी तौर पर لَاحَوْلَ"पढ़ने से"कहने से भाग जाए।" لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कह दिया तो शैतान दौड़ जाएगा।" इस तरह से तो ख़ाह सौ दफ़ा لَاحَوْلَ' पढ़ जाए वह नहीं भागेगा बल्कि असल बात यह है कि जिसके ज़र्रा ज़र्रा में لَاحَوْلَ' सरायत कर जाता है और जो हर वक़त ख़ुदा तआला से ही मदद और सहायता तलब करते रहते हैं और इस से ही फ़ैज़ हासिल करते रहते हैं वे शैतान से बचाए जाते हैं।"

दिल से आवाज़ निकलनी चाहिए। मतलब पता होना चाहिए। सिर्फ ज़बानी जमा ख़र्च नहीं।" और वही लोग होते हैं जो सफलता पाने वाले होते हैं।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 61 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर अपनी एक मजलिस में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "याद रखो कि यह जो ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद का आरंभ भी दुआ से ही किया है और फिर उस को ख़त्म भी दुआ पर ही किया है तो इसका यह मतलब है कि इन्सान ऐसा कमज़ोर है कि ख़ुदा के फ़ज़्ल के बग़ैर पाक हो ही नहीं सकता।" मज्लिस में यह वर्णन किया था। उसकी रिपोर्ट में दूसरी जगह इस तरह भी आगे फ़िक़रा है कि "तुम अपने तईं पाक मत ठहराव क्योंकि कोई पाक नहीं जब तक ख़ुदा पाक न करे।" बहरहाल फिर आगे फ़रमाया "और जब तक ख़ुदा तआला से मदद और नुसरत न मिले यह नेकी में तरक़्क़ी कर ही नहीं सकता।" नेकी में तरक़्क़ी करने के लिए ख़ुदा तआला की मदद चाहिए। "एक हदीस में आया है कि सब मुर्दे हैं मगर जिसको ख़ुदा ज़िंदा करे और सब गुमराह हैं मगर जिसको ख़ुदा हिदायत दे और सब अंधे हैं मगर जिसको ख़ुदा बीना करे।

उद्देश्य यह सच्ची बात है कि जब तक ख़ुदा का फ़ैज़ हासिल नहीं होता तब तक दुनिया की मुहब्बत का तौक़ गले का हार रहता है और वही इस से ख़लासी पाते हैं जिन पर ख़ुदा अपना फ़ज़्ल करता है परंतु याद रखना चाहिए कि ख़ुदा का फ़ैज़ भी दुआ से ही शुरू होता है। "अल्लाह का फ़ैज़ पाना है तो उस के लिए भी दुआ ही करनी पड़ेगी।" लेकिन यह मत समझो कि दुआ सिर्फ़ ज़बानी बक बक का नाम है बल्कि दुआ एक किस्म की मौत है जिसके बाद ज़िंदगी हासिल होती है। जैसा कि पंजाबी में एक शेअर है जो मंगे सौ मर रहे मरे सौ मंगन जा" अर्थात मांगने वाले को तो अपने ऊपर मौत वारिद करनी पड़ती है। अतः अगर मौत वारिद करने का हौसला है तो फिर मांगने वाले बनो। अगर यह कर सकते हो और करोगे तो फिर मांगने वाले बनो। फ़रमाया "दुआ में एक मक़नातीसी असर होता है वह फ़ैज़ और फ़ज़्ल को अपनी तरफ़ खींचती है। यह क्या दुआ है" यह तो कोई दुआ नहीं है "कि मुँह से तो اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ कहते रहे और दिल में ख़्याल रहा कि फ़ुलां सौदा इस तरह करना है।" ज़बान किसी और तरफ़ चल रही है। दिमाग़ और दिल कहीं और तरफ़ जा रहा है। "अमुक चीज़ रह गई। यह काम यूं चाहिए था अगर इस तरह हो जाए तो फिर यूं करेंगे दुनियावी बातें अधिक दिमाग़ में चल रही हैं और ज़बान पर बज़ाहिर दुआ निकल रही हो। फ़रमाया" यह तो सिर्फ़ उम्र का ज़ाए करना है। जब तक इन्सान किताबुल्लाह को मुक़द्दम नहीं करता और उसी के मुताबिक़ अमल दरआमद नहीं करता तब तक उसकी नमाज़ें केवल वक़्त का ज़ाए करना है।" अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन-ए-करीम में जो अहकाम दिए हैं उनको पढ़ो। रमज़ान में हम पढ़ते भी रहे। दरस भी सुनते रहे। उन पर अमल करो, देखो और फिर जो ज़िंदगी गुज़ारोगे वह असल ज़िंदगी है वह वह ज़िंदगी है, उन लोगों की ज़िंदगी है जिन पर अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाता है :

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए-मजीद में तो साफ़ तौर पर लिखा है قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ۔ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ (अल् मोमेनून : 2-3) अर्थात जब दुआ करते करते इन्सान का दिल पिघल जाए और आस्ताना उलूहियत पर ऐसे ख़ुलूस और सिदक़ से गिर जाए कि बस इसी में महव हो जाए और सब ख़्यालात को मिटा कर इसी से फ़ैज़ और सहायता तलब करे और ऐसी यकसूई हासिल हो जाए कि एक किस्म की रिक्त और गुदाज़ पैदा हो जाए तब फ़लाह का दरवाज़ा खुल जाता है।" फ़लाह पाने वाले वही मोमिन हैं जिनकी नमाज़ें ख़शीयत से भरी पड़ी हैं। तब फ़लाह के दरवाज़े खुलते हैं जब दिल बिल्कुल ही गुदाज़ हो जाए। अल्लाह तआला का फ़ैज़ और उसकी सहायता तब आती है जब विशेष हो कर अल्लाह तआला के लिए हो के इन्सान दुआएं कर रहा हो। फ़रमाया तब फ़लाह का दरवाज़ा खुल जाता है "जिससे दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो जाती है क्योंकि दो मुहब्बतें एक जगह जमा नहीं रह सकतीं लिखा है :

اِیں خیال است و مُحال　　　ہم خدا خواہی وَ ہَم دنیائے دُوں
استوجُنُوں"

अर्थात तू ख़ुदा का तालिब भी बनता है और इस हक़ीर दुनिया का भी। यह महिज़ वहम है। यह तो ख़्यालात ही हैं। नामुमकिन बातें हैं यह तो। ये दो चीज़ें इकट्ठी नहीं हो सकतीं। यह दीवानगी वाली बातें हैं। पागलपन है। फ़रमाया "इसी लिए उसके बाद ही ख़ुदा फ़रमाता है। وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ (अल् मोमेनून : 4) यहां लग़ू से मुराद दुनिया है अर्थात जब इन्सान को नमाज़ों में ख़ुशू और ख़ुज़ू हासिल होने लग जाता है तो फिर उस का नतीजा यह होता है कि दुनिया की मुहब्बत उस के दिल से ठंडी हो जाती है। इस से यह मुराद नहीं है कि फिर वह काशतकारी, तिजारत, नौकरी इत्यादि छोड़ देता है बल्कि वह दुनिया के ऐसे कामों से जो धोखा देने वाले होते हैं और जो ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर देते हैं आराज़ करने लग जाता है।" दुनिया के ऐसे कामों से फिर बचता है जो अल्लाह तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ हैं। उसकी मज़ीद वज़ाहत में आगे एक जगह इस तरह भी लिखा है क्योंकि यह एक मजलिस का वर्णन है। तो फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है।" رِجَالٌ لَّا تُلۡهِيۡهِمۡ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيۡعٌ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ (अल्नूर : 38) अर्थात हमारे ऐसे बंदे भी हैं जो बड़े बड़े कारख़ाना तिजारत में एक दम के लिए भी हमें नहीं भूलते।" काम भी कर रहे होते हैं लेकिन अल्लाह को नहीं भूलते। फ़रमाया कि "ख़ुदा से ताल्लुक़ रखने वाला दुनिया-दार नहीं कहलाता बल्कि दुनियादार वह है जिसे ख़ुदा याद न हो।"

बहरहाल फिर ख़ुदा के बंदों की तारीफ़ करते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "और ऐसे लोगों की गिरया-ओ-ज़ारी" यानी ख़ुदा के बंदों की गिरया-ओ-ज़ारी"और तज़र्रे और आंसुओं के साथ प्रार्थना करने का कार्य और ख़ुदा के हुज़ूर आजिज़ी करने का यह नतीजा होता है कि ऐसा शख़्स दीन की मुहब्बत को दुनिया की मुहब्बत, हिर्स, लालच और ऐश-ओ-इशरत सब पर मुक़द्दम कर लेता है।" यह दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने की तारीफ़ है" क्योंकि यह क़ायदा की बात है कि एक नेक फ़ेल दूसरे नेक फ़ेअल को अपनी तरफ़ खींचता है और एक बद फ़ेअल दूसरे बद फ़ेअल की तरग़ीब देता है। जब वे लोग अपनी नमाज़ों में ख़ुशू ख़ुज़ू करते हैं तो इस का लाज़िमी नतीजा यह होता है कि सावभाविक रूप वे लग़ू से आराज़ करते हैं और इस गंदी दुनिया से नजात पा जाते हैं और इस दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो कर ख़ुदा की मुहब्बत उनमें पैदा हो जाती है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 62 से 64 हाशिया के साथ) नमाज़ें उन्हें नेकियों की तरफ़ ही ले जाती हैं। दुनिया के कारोबारों के बावजूद दुनिया उनका उद्देश्य नहीं होती जैसा कि पिछले ख़ुतबा में मैं ने لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की वज़ाहत की थी। मक़सूद मतलूब महबूब अल्लाह तआला की ज़ात होती है।

अतः यह है वह मयार जिसे हमें अपने शैतान को मारने के लिए अपनाना होगा। शैतान को भगाने के लिए अगर لَاحَوْلَ पढ़ रहे हैं तो फिर प्रत्येक लम्हा हमारे ज़हनों में यह बात रासिख़ रहनी चाहिए कि सब कुव्वतों और ताक़तों का मालिक ख़ुदा तआला है। एक पत्ता भी अल्लाह तआला के इज़्न के बग़ैर नहीं

गिर सकता। कहने को तो हम में से अक्सर कह देते हैं कि यही हमारा ईमान है। हम तो मानते हैं लेकिन जब अमली मुज़ाहिरे का वक़्त आए तो फिर दूसरे ख़ौफ़ जो हैं, दुनियावी ख़ौफ़ जो हैं और मुहब्बतें जो हैं और ख़ाहिशात जो हैं वह अल्लाह तआला की मुहब्बत पर ग़ालिब आ जाती हैं।

अतः अल्लाह तआला पर हक़ीक़ी ईमान और अल्लाह तआला की हक़ीक़ी इबादत तो ऐसी होनी चाहिए कि इस का असर हमारे जिस्म और रूह दोनों पर पड़े और जब इबादत के ये मयार हों तो ज़ाहिरी बुनियादी अख़लाक़ भी बुलंदियों की तरफ़ जाते हैं। दिल-ओ-दिमाग़ और रूह पाक होती है। शैतान के प्रत्येक हमले और प्रत्येक किस्म के दजल से इन्सान अल्लाह तआला की पनाह में आने की वजह से बचता है। इबादत के वे मयार इन्सान हासिल करता है जिसके दौरान किसी किस्म के ग़ैरुल्लाह का दख़ल नहीं हो सकता। नमाज़ और इबादत का हक़ अदा करने के साथ हमें यह बात भी सामने रखनी चाहिए कि हक़ अदा करने के बारे में हदीस में आया है कि नमाज़ इबादत का मग़ज़ है। (उद्धृत भाग 7 पृष्ठ 367 ऐडीशन 1984 ई.)

जब हम इस मग़ज़ को हासिल करने की कोशिश करेंगे तो नमाज़ का भी हक़ अदा करने वाले बनेंगे और इबादत का भी हक़ अदा करने वाले बनेंगे। अल्लाह तआला के क़ुरब को हासिल करने वाले बनेंगे। अपनी रूह और जिस्म पर भी एक इन्क़लाब पैदा करने वाले बनेंगे अन्यथा ज़ाहिरी नमाज़ें कुछ फ़ायदा नहीं देतीं। बेशुमार नमाज़ी हैं जो मस्जिदों में जा कर नमाज़ें पढ़ कर फिर ज़ुलम--ओ-ताद्दी की इंतेहा किए हुए हैं। यह दहश्तगर्द तंज़ीमें जो हैं, तथा कथित मुल्ला जो हैं यह अल्लाह तआला और उस के रसूल के नाम पर क्या कुछ ज़ुलम नहीं कर रहें। इन लोगों ने दुनिया का अमन बर्बाद किया हुआ है। यह उन दुनियादारों से अधिक ज़ालिम हैं जो दुनियावी उद्देश्य के लिए ज़ुलम कर रहे हैं। वह तो दुनिया के उद्देश्य के लिए ज़ुलम कर रहे हैं लेकिन यह तो रहमान और रहीम ख़ुदा और समस्त संसार के लिए रहमत वाले रसूल के नाम पर ज़ुलम कर रहे हैं। अतः उनके बुरे नमूने एक अहमदी को इस्लामी तालीम के आला नमूनों को क़ायम करने वाला बनाने वाले होने चाहिऐं। हमारी नमाज़ें और हमारी इबादतें और हमारी दुआएं अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने वाली होनी चाहिऐं। अगर हमने इस उद्देश्य को पा लिया तो हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का भी हक़ अदा कर दिया और रमज़ान की बरकात से भी फ़ैज़ पा लिया। हमारी नमाज़ें किस किस्म की होनी चाहिऐं और किस तरह उनका हक़ अदा होता है

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "याद रखना चाहिए कि नमाज़ ही वह वस्तु है जिससे सब मुश्किलात आसान हो जाते हैं।"नमाज़ ही वह वस्तु है जिससे तमाम मुश्किलात आसान हो जाती हैं "और सब बलाऐं दूर होती हैं। परंतु नमाज़ से वह नमाज़ मुराद नहीं जो आम लोग रस्म के तौर पर पढ़ते हैं बल्कि वह नमाज़ मुराद है जिससे इन्सान का दिल-गुदाज़ हो जाता है" पिघल जाता है "और आस्ताँने अहदीयत पर गिर कर ऐसा डूब जाता है कि पिघलने लगता है। और फिर यह भी समझना चाहिए कि नमाज़ की हिफ़ाज़त इस वास्ते नहीं की जाती कि ख़ुदा को ज़रूरत है।"

हम नमाज़ पढ़ते हैं या उस की हिफ़ाज़त कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कि ख़ुदा को हमारी इबादतों की ज़रूरत है। "ख़ुदा तआला को हमारी नमाज़ों की कोई ज़रूरत नहीं।" फ़रमाया ख़ुदा को हमारी नमाज़ों की कोई ज़रूरत नहीं।"वह तो غنی عن العالمین है उसको किसी की हाजत नहीं बल्कि इस का अर्थ यह है कि इन्सान को ज़रूरत है और यह एक राज़ की बात है कि इन्सान ख़ुद अपनी भलाई चाहता है। "इन्सान चाहता है अपनी भलाई। यही हक़ीक़त है। "और इसी लिए वह ख़ुदा से मदद तलब करता है। "अपनी भलाई के लिए ख़ुदा से मदद तलब करता है" क्योंकि यह सच्ची बात है कि इन्सान का ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ हो जाना हक़ीक़ी भलाई का हासिल कर लेना है। ऐसे शख़्स की अगर समस्त दुनिया दुश्मन हो जाए और इस की हलाकत के दर पर रहे तो इस का कुछ बिगाड़ नहीं सकती और ख़ुदा तआला को ऐसे शख़्स की ख़ातिर अगर लाखों करोड़ों इन्सान भी हलाक करने पढ़ें तो कर देता है और इस एक की बजाय लाखों को फ़ना कर देता है।"

फ़रमाया "याद रखो यह नमाज़ ऐसी चीज़ है कि इस से दुनिया भी सँवर जाती है और दीन भी।"

दोनों चीज़ें इस से मिलती हैं अगर इन्सान अल्लाह की ख़ातिर नमाज़ें पढ़ रहा है। हक़ीक़त में इस का हक़ अदा करते हुए नमाज़ें पढ़ने वाला है। फ़रमाया "लेकिन अक्सर लोग जो नमाज़ पढ़ते हैं तो वह नमाज़ उन पर लानत भेजती है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 66 ऐडीशन 1984 ई.) अल्लाह तआला हमें नमाज़ों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे। कभी ऐसी नमाज़ें न हों जो अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाली हों। हम अल्लाह तआला के इनामों का वारिस बनने वाले हों। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ जोड़ते हुए इन वादों से हिस्सा लेने वाले हों जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमाए हैं। हम अपनी नसलों को भी ऐसी इबादत की आदत डालने वाले बनें जो उन की बक़ा और आइन्दा नसलों की बक़ा की ज़ामिन बन जाएं।

जब यह होगा तो फिर जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है दुनिया का कोई दजल, शैतान का कोई हमला हमारा बाल भी बाका नहीं कर सकता। दुनिया हज़ार हमारी तबाही और बर्बादी के मंसूबे बाँधे हमें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता बल्कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। अल्लाह तआला अपने बंदों की ख़ातिर लाखों करोड़ों को भी हलाक कर देता है। अतः अल्लाह तआला का प्यार और उसकी रज़ा हासिल करने के लिए हमें अपनी इबादतों के मयार को बहुत बुलंद करना होगा। दज्जाल ने तो इस ज़माने में तबाह होना है यह अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है और इस में कोई शक नहीं।

यह हमारी ख़ुशक़िसमती होगी कि हम अपनी इबादतों के मयार ऊंचे करते हुए, अपनी हालतों को दरुस्त करते हुए उन लोगों में शामिल हो जाएं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शमूलीयत का हक़ अदा करने वाले हैं और यह हक़ अदा करने के लिए जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक नुस्ख़ा यह भी वर्णन फ़रमाया है कि गिरया-ओ-ज़ारी और तज़र्रों और इबतेहाल (अर्थात रोना और बड़ी बे-इंतेहा ज़ारी करना ख़ुदा तआला के हुज़ूर आजिज़ी करने से ही हासिल होता है। अतः यह मुक़ाम हासिल करने की कोशिश करो और किस तरह हासिल करो। फ़रमाते हैं : "चाहिए कि तुम्हारा दिन और तुम्हारी रात ग़रज़ कोई घड़ी दुआओं से ख़ाली न हो।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 67 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः जब यह हालत होगी तो हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनेंगे। प्रत्येक शैतानी हमला और दज्जाली हमला नाकाम-ओ-ना-मुराद होगा। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी ज़िंदगियां अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम पर चलते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ाहिश के मुताबिक़ गुज़ारने वाले हों और आप अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला की रज़ा हमारा मक़सूद हो। हम यह अह्द करने वाले हों कि हम उस वक़्त तक आराम से नहीं बैठेंगे जब तक हम अपने अंदर ऐसी पाक तबदीलियां पैदा न कर लें जो हमारी हालतों को अल्लाह तआला की रज़ा के मुताबिक़ ढालने वाली हों। कभी हम अपने अंदर और अपनी औलादों और नसलों के अंदर शैतान को दाख़िल होने नहीं देंगे। इस के लिए प्रत्येक मुम्किन कोशिश करेंगे और इस के लिए प्रत्येक वह कोशिश करेंगे जिसकी तालीम हमें अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है। बल्कि दुनिया को भी शैतान और दज्जाल से पाक करने की भरपूर कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें मुख़ालेफ़ीन के शर से महफ़ूज़ रखे। शरीरों के शर उन पर उलटाए। ख़ुद पाकिस्तान में रहने वाले अहमदी भी अपने लिए ख़ास गिर्ये-ओ-ज़ारी से दुआएं करें। तीन दिन या चार दिन या हफ़्ते की दुआएं नहीं, मुस्तक़िल दुआएं करें और अपनी ज़िंदगियों को ख़ुदा तआला की रज़ा के मुताबिक़ ढालने का अह्द करें।

बुर्कीना फासो के अहमदियों, बंगलादेश के अहमदियों, अल-जज़ायर और दुनिया के प्रत्येक देश के अहमदियों के लिए दुआ करें अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को दुश्मन के शर से बचाए और उनके ईमान और ईक़ान में मज़बूती पैदा करे।

अल्लाह तआला हमें अपने अंदर पाक तबदीलियां पैदा करने की और फिर दुआएं करने की तौफ़ीक़ दे और उन्हें क़बूल भी फ़रमाए

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोई के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-8)

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म मिनार अहमद ने यह प्रश्न किया कि हुज़ूर क्या आपको लगता है कि psychokinesis मुम्किन है? अर्थात् कि केवल ज़हनी कोशिश से वस्तुओं को स्थानांतरित करने या परिवर्तित करने की ताक़त संभव है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हाँ यह संभव है। इसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब इज़ाला औहाम में लिखा है। लेकिन आपने स्पष्ट किया कि इस का अर्थ यह नहीं है कि उस शख़्स के पास वह ताक़त है जो ख़ुदा के पास है। आपने वर्णन किया कि कुछ लोग ऐसे हैं जो इर्तिकाज़ (concentration) की ताक़त से ऐसा कर सकते हैं। वे इस मेज़ को न केवल हिला सकते हैं बल्कि मेज़ पर बैठे लोगों को भी हिला सकते हैं लेकिन यह एक आरिज़ी process है। जब भी वह अपना इर्तिकाज़ खो देते हैं तो यह चीज़ रुक जाएगी। इस विषय पर मज़ीद तहक़ीक़ की ज़रूरत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि कुछ लोगों के पास उसकी ताक़त है लेकिन इस का यह मतलब नहीं है कि उनके पास वही हैसियत है जो नबी को दी गई है। इज़ाला औहाम किताब पढ़ें आपको इस के बारे में और मालूमात हासिल होंगी।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म लबीब अहमद ज़ाहिद ने यह सवाल किया कि कभी कभी सोचता हूँ कि क्या अल्लाह हक़ीक़ी है? अल्लाह के वजूद का यक़ीन करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप जस्मानी तौर पर अल्लाह को नहीं देख सकते, आप जानते हैं कि अल्लाह नूर है। क्या आप रोज़ाना पाँच बार नमाज़ पढ़ते हैं, क्या आपने कभी दुआ की क़बूलियत का तजुर्बा किया है। अल्लाह तआला दुआ क़बूल करके अपने वजूद और अपनी हस्ती को साबित करता है ज़ाहिर करता है। जब आप अल्लाह से दुआ करते हैं और वह उसे क़बूल करता है तो आपको स्पष्ट मालूम होता है कि आपने जो कुछ हासिल किया है वह अल्लाह से ही इस दुआ की क़बूलियत से है और जब आप नमाज़ पढ़ते हैं और आप सज्दे में होते हैं और कभी-कभी आप बहुत ज़ोर से रोते हैं और आपको दिल में इतमेनान होता है और आपको लगता है कि अब मेरी दुआएं क़बूल हो गई हैं कि अल्लाह मेरा भला करेगा। अहमदियों का हमेशा अल्लाह के साथ यह अनुभव होता है। क्या आपने कभी दुआ की क़बूलियत का तजुर्बा किया है?

इस पर उन्हों ने अर्ज़ किया कि तजुर्बा किया है। तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि फिर आप यह सवाल किस लिए कर रहे हैं क्योंकि अल्लाह ने ख़ुद आपको अपना चेहरा दिखाया है। इस तरह अल्लाह अपना चेहरा दिखाता है। इसलिए अगर आपके पास इस सिलसिले में कुछ और सवालात हैं तो आप पूछ सकते हैं।

इस पर वाक़िफ़ नौ ने पूछा : लेकिन कभी कभी मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ और मेरी दुआ पूरी नहीं होती।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ज़रूरी नहीं है कि अल्लाह-तआला आपकी प्रत्येक दुआ क़बूल करे। अल्लाह तआला मालिक है। कभी आपकी कुछ दुआएं जो आप मांगते हैं आप के लिए अच्छी नहीं होतीं लेकिन वह यह दुआएं भी ज़ाए नहीं होने देगा। इस दुआ का फ़ायदा आपके हिसाब में जमा हो जाएगा। जब भी आपको किसी चीज़ की ज़रूरत होगी अल्लाह आपको उन दुआओं का फ़ायदा देगा।

एक वाक़िफ़ नौ अज़ीज़म जाज़िब अहमद भट्टी ने यह सवाल किया कि आज के माद्दापरस्त मुआशरे में लड़कियों की अक्सरियत करीयर की तरफ़ मायल है। एक ऐसा वाक़िफ़ नौ लड़का जो एक बाअख़लाक़ और ऐसे जीवन साथी की तलाश में है जो अपने करीयर की निसबत अपने घर की तरफ़ अधिक तवज्जा देने वाली हो हुज़ूर अनवर की इस के बारे में क्या नसीहत है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जब आप शादी के हवाला से कोई रिश्ता ढूंढ रहे हैं तो आप लड़की की ख़ूबसूरती, उस की दौलत और उसका ख़ानदानी हैसियत की बिना पर शादी कर सकते हो लेकिन एक मुत्तक़ी मोमिन को ऐसी लड़की का इंतेख़ाब करना चाहिए जो अच्छी मोमिन भी हो, जो अपने दीन में बेहतरीन हो। आप नेक लड़की चाहते हैं तो आपको ख़ुद भी नेक होना पड़ेगा। जब आप ख़ुद रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ नहीं पढ़ते तो आप नेक लड़की से शादी की ख़ाहिश कैसे कर सकते हैं ? अगर आप दोनों रुहानी और दीनी तौर पर मयारी हैं तो फिर घर में अमन और हम-आहंगी रहेगी और आपकी आने वाली नसलें भी अच्छे हाथों में परवरिश पाएँगी।

हुज़ूर अनवर ने वाकफ़ीन नौ को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि समस्त दुनियावी तालीम और अपनी ख़ाहिशात को मद्द-ए-नज़र रखते हुए आप फिर भी एक अच्छे मुस्लमान बन सकते हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि आपके माता पिता ने आपको पैदाइश से पहले ही जमाअत की ख़िदमत करने के लिए पेश किया था। अगर आप उनके वादे को पूरा करना और निभाना चाहते हैं तो आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि वक़्फ़ नौ के क्या फ़रायज़ हैं? और मैंने कैनेडा में चंद वर्ष पहले वक़्फ़ नौ की ज़िम्मेदारियों के विषय में ख़ुतबा जुमा दिया था। इस ख़ुतबा में जो मैंने हिदायात दी हैं आप उन पर अमल करें। दूसरी बात अगर आपको लगता है कि आप वक़्फ़ की ज़िम्मेदारियाँ नहीं निभा सकते तो आप जो चाहें करें। जो भी विषय हो। आप अहमदी हैं। रुहानी और अख़लाक़ी मयार बढ़ाना आपका फ़र्ज़ है। इस के साथ आप दुनियावी तालीम और दुनियावी पढ़ाई भी कर सकते हैं। लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि आप जो कुछ भी कर रहे हैं अल्लाह हमेशा आपको देख रहा है। कभी भी बुरा काम न करो क्योंकि अगर आपको आख़िरत की ज़िंदगी पर यक़ीन है तो आप को याद रखना चाहिए कि आपने अच्छा काम नहीं किया तो आपको आख़िरत में इस की सज़ा मिल सकती है।

वाकफ़ीन-ए-नौ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह कलासी 8 बजकर 5 मिनट पर ख़त्म हुई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले गए। 8:30 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने "मस्जिद बैतुल इकराम" तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए। 6 अक्तूबर 2022 ई. जुमेरात के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विभिन्न देशों से मौसूल होने वाली डाक, फैक्सज़, ई मेल्ज़ और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और इस समस्त डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टस पर अपने दस्त-ए-मुबारक से हिदायात से नवाज़ा। यहां अमरीका से भी रोज़ाना बड़ी संख्या में अहबाब जमाअत के ख़ुतूत मौसूल हो रहे हैं। हुज़ूर अनवर यह ख़ुतूत भी मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात अता फ़रमाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" में तशरीफ़ ला कर नमाज़ जुहर और असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली और ग्रुप मुलाक़ातें

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 24 फ़ैमिलीज़ और 2 ग्रुपस अफ़्ग़ानी और मार्शलीज़ ने मुलाक़ात की सआदत हासिल की। मुलाक़ात करने वालों की मजमूई संख्या 192 थी।

आज मुलाक़ात करने वाले ये अहबाब, फ़ैमिलीज़ dallas की मुक़ामी जमाअत के इलावा अमरीका की विभिन्न जमाअतों kentucky chicago bay point fort worth tulsa alabam a georgia los angeles houston la s vegas - sacramento से आए थे।

आज भी कुछ फ़ैमिलीज़ और अहबाब बड़े तवील सफ़र तै करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। शिकागो से वाले 904 मील, लास वेगास से आने वाले 1221 मील, लास अंजलीज़ से आने वाले अहबाब और फ़ैमिलीज़ 1433 मील का सफ़र तै करके पहुंचे थे जबकि Bay point से आने वाले अहबाब और फ़ैमिलीज़ 1712 मील का तवील सफ़र तै करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं।

आज पाकिस्तान से आने वाले कुछ अहबाब ने भी मुलाक़ात की सआदत पाई। इन मुलाक़ात करने वाले सभी अहबाब और फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों और तालिबात को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

आज भी इन मुलाक़ात करने वालों में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मिल रहे थे। कितने ही ख़ुशनसीब, ख़ुश-क़िस्मत ये लोग थे जिनको ख़लीफ़तुल मसीह के क़ुरब की ये चंद साअतें नसीब हुईं। यही चंद लमहात उनकी सारी ज़िंदगी का सरमाया हैं। उनकी नसलें भी और उनके वे बच्चे भी जो माता पिता के साथ आए थे, बड़े हो कर उस वक़्त को याद किया करेंगे।

डेलास (dallas) जमाअत के एक मैंबर ताहिर वडेच साहिब जब मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर आए तो उनकी आँखों में आँसू थे। कहने लगे कि मेरे पास शब्दों नहीं हैं कि मैं वर्णन कर सकूँ। मुझे जो दिल का सुकून मिला है मेरे दिल को जो इतमेनान हासिल हुआ है मैं इस को वर्णन नहीं करसकता। मैं ने अपने प्यारे आक़ा से दुआएं मांगें। मुझे अब और क्या चाहिए। मुझे तो सब कुछ मिल गया।

एक दोस्त अददाब मंज़ूर बाजवा साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर एक इलाही नूर है जिसे आप टीवी पर इस तरह नहीं देख सकते। आप इस नूर को केवल ज़ाती तौर पर देख सकते जमाअत Bay point से एक दोस्त फ़रीद अहमद 1712 मील का तवील तरीन सफ़र करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए आए थे। जब उनसे मुलाक़ात का अहवाल दरयाफ़त किया तो रोने लग गए। बात ही नहीं कर सकते थे। बस यह कहते कहते चले गए कि इस चेहरे में सच्चाई है। इस चेहरा में तक़्वा है, इस चेहरा में नूर है।

एक शरीफ़ olekesh ajala साहिब जमाअत डेलास से आए थे। कहने लगे कि मुझे फ़ख़र है कि मैं अमरीका आकर अपने ख़लीफ़ा से मिल हूँ। मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ। मुझे पता है कि मेरे देश के ज़्यादा-तर लोगों को यह अवसर कभी नहीं मिलेगा। alabama जमाअत से आने वाले एक दोस्त हम्माद अहमद ख़ान साहब ने कहा कि मैं राहत और ख़ुशी महसूस कर रहा हूँ। उनकी बेटी साथ थी वह shock में थी और एक बात भी न करसकी। अल्लाह तआला ने कितनी अज़ीम सआदत अता फ़रमाई थी।

जमाअत dallas से एक दोस्त suliat Ope yemi साहिब मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर आए तो कहने लगे मैं क्या कहूं। अल्लाह तआला ने मुझे अपनी जमाअत से और ख़लीफ़ा से इज़्ज़त बख़शी है। हमारे जाने से क़बल ही हुज़ूर अनवर को पता चल गया था कि हम नाईजेरिया से आए हैं और हम यूरोबा (yoruba) हैं। हमने कोई शब्द ही अदा नहीं किया था लेकिन हुज़ूर को सब मालूम था। हुज़ूर को यह भी मालूम था कि हम अफ़्रीक़ा में कहाँ से, किस जगह से हैं।

एक नौजवान रिज़वान अहमद ख़ान साहिब जब मुलाक़ात करके बाहर आए तो उनसे बात ही नहीं हो रही थी। उनकी रोने वाली हालत थी। कहने लगे कि मैंने हुज़ूर से पूछा कि मैं ख़ुदा के बारे में अपने संदेह को कैसे दूर करूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दिल से अल्लाह तआला से दुआ करें और अल्लाह तआला से अपने वजूद को ज़ाहिर करने की दुआ करें।

एक साहिब जरीउल्लाह ख़ान साहब जमाअत डेलास (dallas) से आए थे। अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहने लगे कि ख़िलाफ़त अहमदिया मेरी ज़िंदगी में अल्लाह तआला की हस्ती का सबसे बड़ा सबूत है। आज यह मेरी ज़िंदगी की बेहतरीन मुलाक़ात थी। मैं अपने बच्चों के साथ था और मेरे बच्चों ने ही अक्सर बात की। मैं बस चाहता हूँ कि मेरे बच्चे ख़िलाफ़त और ख़ुदा के क़रीब हो जाएं।

एक ख़ातून आयशा मुबश्शिर जमाअत kentucky से आई थीं। मुलाक़ात करके बाहर आएं तो रोने लग गईं। कहने लगीं कि वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्दों नहीं हैं। हुज़ूर अनवर ने मेरी फ़ैमिली के बारे में पूछा। मेरे बच्चों के लिए दुआ की। मैं तो दुआएं लेकर आई जमाअत houston से आने वाले एक दोस्त शाह ग़ालिब साहिब ने कहा मेरी अपने रुहानी वालिद से मुलाक़ात हुई। मुझे और क्या चाहिए। ख़लीफ़ा वक़्त की सोहबत से दिल तसकीन से भर जाता है और दिल मुनव्वर हो जाता है।

तूबा मलिक साहिबा जमाअत dallas से आई थीं। ये जब बाहर आएं तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। कहने लगीं मेरे पास कोई शब्दों नहीं हैं। आज ये मेरी ज़िंदगी का सबसे ख़ूबसूरत लम्हा है और ख़ुदा तआला के महबूब बंदा से मेरी मुलाक़ात हुई है।

नुसरत मलिक साहिबा जमाअत dallas से मुलाक़ात के लिए आई थीं। यह भी रो रही थीं। कहने लगीं हुज़ूर अनवर हमारी इस जमाअत से बहुत मुहब्बत करते हैं। इतनी दूर से आकर हमें वक़्त अता फ़र्मा रहे हैं। हम कितने ख़ुशनसीब हैं।

अफ़्ग़ानिस्तान से आने वाली महिलाएं और बच्चियों पर मुश्तमिल एक ग्रुप ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की सआदत हासिल की। मुलाक़ात के दौरान इन महिलाओं और बच्चियों ने अपनी मुक़ामी पुश्तो ज़बान में सुंदर आवाज़ के साथ एक नज़्म पेश की। इस नज़्म का उर्दू अनुवाद दर्ज है :

हुज़ूर तशरीफ़ लाए और रोशनी चांद जैसी हो गई
हम दिन गिन रहे थे और दिन ख़ुशियों वाले आगए
आँखें शम्मा की तरह ईमान व इख़लास से भर गईं
प्रत्येक के लिए दुआ तेज़ बारिश जैसी हो गई
हम ख़लीफ़ा के हो गए और ख़लीफ़ा हमारा हो गया
ऐसी अपनाईयत हमारी और हमारे आक़ा के दिलों की हो गई

आज साउथ पैसिफिक के जज़ायर मुल्क मार्शल आईलैंड (marshal islands) से ताल्लुक़ रखने वालिया हमदी अहबाब के ग्रुप ने भी मुलाक़ात की सआदत पाई। ये ग्रुप 7 लोगों पर मुश्तमिल था जिनमें चार मर्द हज़रात, दो महिलाएं और एक बच्चा शामिल था।

मार्शलीज़ क़ौम से ताल्लुक़ रखने वाले ये लोग arkansas स्टेट के शहर springdale में आबाद हैं। ये 330 मील का सफ़र तै करके मुलाक़ात के लिए dallas पहुंचे थे।

मुलाक़ात के बाद इन सभी अहबाब ने इस बात का इज़हार किया कि

हमारे दिल की धड़कन तेज़ हो गई थी और हमारे लिए बोलना मुश्किल हो गया था।

एक दोस्त luke zackious साहिब कहने लगे कि आज की मुलाक़ात में जो हमें हुज़ूर का क़ुरब हासिल हुआ। यह मेरे लिए एक विशेष लम्हा था।

एक ख़ादिम romeo tanson ने कहा कि यह मेरी हुज़ूर अनवर से दूसरी मर्तबा मुलाक़ात थी और मेरे लिए एक विशेष याद है। यह मुलाक़ात मुझे हमेशा याद रहेगी। मैं जब भी कभी डेलास आऊँगा तो विशेषता यह मुलाक़ात मुझे याद आया करेगी।

एक ख़ातून jenila john साहिबा ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि मैं जैसे ही हुज़ूर अनवर के दफ़्तर गई तो केवल हुज़ूर अनवर के चेहरा को ही देखती रही कि कितना नूरानी चेहरा है।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8:30 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हु 7 अक्तूबर 2022 ई. शुक्रवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" डेलास तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई।नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी उमूर की अंजाम दही में व्यस्त रहे। आज जुमअतुल मुबारक का दिन था और आज अमरीका की टेक्सास स्टेट के शहर डेलास (dallas) में हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा के साथ जमाअत की नई मर्कज़ी मस्जिद "मस्जिद बैतुल इकराम" का इफ़्तताह हो रहा था।

नमाज़-ए-जुमा में जमाअत डेलास (dallas) के इलावा अमरीका भर की जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके पहुंचे थे। अमरीका की विभिन्न जमाअतों houston, qu eens, austin, georgia, maryland, fort worth, tulsa, north, virginia, bay point, south virginia, san jose, san diego, richmond, cen tral jersey, portland, le high valley, brooklyn, no rth jersey, buffalo, osh kosh, york, charlotte , detroit, chicago, boston

kansas city, pittsburg , long island, alabama, phi ladelphia, albany, sa cramento, baltimore, cleveland, hawaii, mi ami, phoeniy, tuscon, willingboro, syracuse, malawaki.

और दीगर जमाअतों से आए थे।

कुछ जमाअतों से लोग बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए पहुंचे थे। maryland से आने वाले अहबाब 1367 मील, लास अंजलीज़ से ने वाले अहबाब और महिलाएं 1433 मील जबकि queen की जमाअत से आने वाले अहबाब 1578 मील का सफ़र तै करके नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए आए थे।

फिर एक बड़ी दूर की जमाअत सयाटिल (seattle) से आने वाले अहबाब 2095 मील का तवील सफ़र तै करके अपने प्यारे आक़ा की इक़तेदा में नमाज़-ए-जुमा अदा करने के लिए पहुंचे थे।

नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की संख्या अढ़ाई हज़ार से ज़ायद थी।

प्रोग्राम के मुताबिक़ एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैतुल इकराम" में तशरीफ़ ला कर ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया उस ख़ुतबा जुमा का मुकम्मल मतन अख़बार बदर उर्दू तिथि 3 नवंबर 2022 ई. के शुमारा में शामिल इशाअत है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ये ख़ुतबा जुमा पहली मर्तबा डेलास (dallas) टेक्सास स्टेट से एम. टी. ए इंटरनैशनल के ज़रीया बराह-ए-रस्त सारी दुनिया में प्रकाशित हुआ।

हुज़ूर अनवर का यह ख़ुतबा जुमा 2 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत forthworth का विज़ीट

आज प्रोग्राम के मुताबिक़ dallas से जमाअत fort worth के लिए रवानगी थी। डेलास से फोर्ट विरथ का फ़ासिला 53 मील है। 6 बजकर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपनी रिहायशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और fort worth के लिए रवानगी हुई।

पुलिस की गाडियों ने क़ाफ़िला को escort किया और साथ साथ रास्ता क्लीयर करते रहे। क़रीबन एक घंटा के सफ़र के बाद 7 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का मस्जिद बैतुल क़य्यूम fort worth में वुरूद-ए-मसऊद हुआ।

जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुक़ामी जमाअत के सदर श्रीमान सईद साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। अहबाब जमाअत नियमित नारे बुलंद कर रहे थे। महिलाएं अपने हाथ हिलाते हुए शरफ़-ए-ज़यारत से फ़ैज़याब हो रही थीं। बच्चे और बच्चियाँ ख़ूबसूरत लिबास में मलबूस दुआइया नज़्में और इस्तक़बालीया गीत पेश कर रहे थे। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। प्रत्येक तरफ़ ख़ुशी से हाथ बुलंद थे, "अस्सलामो अलैकुम हुज़ूर और इननी माआका या मसरूर की सदाएँ प्रत्येक तरफ़ से बुलंद हो रही थीं। इस जमाअत के लिए यह इंतेहाई मुबारक और बाबरकत लमहात थे। उनके प्यारे आक़ा के मुबारक क़दम पहली बार इस जमाअत की सरज़मीन पर पड़े थे। इन के लिए एक ऐसी ख़ुशी का समां था जो वर्णन नहीं किया जा सकता। बहुतों की आँखें आँसूओं से भर आई थीं।

हुज़ूर अनवर इन अहबाब के पास से गुज़रते हुए अपना हाथ बुलंद करके उनके नारों और अस्सलामो अलैकुम का जवाब देते रहे। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने "मस्जिद बैतुल क़य्यूम" की बैरूनी दीवार पर लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के बैरूनी अहाता में एक पौधा लगाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने इस इमारत का मुआइना फ़रमाया। मस्जिद की lobby में इस इमारत के दो बड़े नक़शाजात आवेज़ां किए गए थे। सदर साहिब जमाअत ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि इस इमारत के दाएं और बाएं दो मीनार तामीर किए जाऐंगे और इसी तरह एक गुंबद भी बनाया जाएगा। मीनार और गुंबद नक़्शा में ज़ाहिर किए गए थे। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के मर्दाना हाल और महिलाएं के हाल का मुआइना फ़रमाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर लाइब्रेरी के अंदर तशरीफ़ ले गए। इसके अतिरिक्त जमाअती दफ़ातिर, मीटिंग रुम और तब्लीग़ी रुम भी देखे और मल्टी परपज़ हाल और लजना के हाल में भी तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैतुल क़य्यूम की यह इमारत 4.7 एकड़ रकबा पर मुश्तमिल है। यह ज़मीन का टुकड़ा 2018 ई. में 7 लाख 75 हज़ार डॉलरज़ की क़ीमत में ख़रीदा गया था। यहां पर जो तामीरात मौजूद हैं उनका मुसक़्क़फ़ एरिया 13 हज़ार मुरब्बा फुट है। इस इमारत में जमाअती दफ़ातिर की संख्या आठ है। इस के इलावा एक gym (फ़िटनैस रुम) भी बनाया गया है। मस्जिद के मर्दाना और महिलाएं के हाल में 300 अफ़राद नमाज़ पढ़ सकते हैं। अगर इस इमारत के बाक़ी हालज़ और lobbies इत्यादि शामिल किए जाएं तो हज़ार के लग भग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। हुज़ूर अनवर मस्जिद के बैरूनी अहाता पार्किंग एरिया की तरफ़ भी तशरीफ़ ले गए और ज़मीन की हदबंदी के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हाल में तशरीफ़ ले आए जहां एक मेज़ पर मस्जिद के दो विभिन्न नक़शाजात प्रिंट करके रखे गए थे और दो मीनारों के सींग बुनियाद के लिए दो ईंटें भी रखी गई थीं। इसके अतिरिक्त एक बासकिट बाल भी रखा गया था। ख़ुद्दाम यहां बासकिट बाल भी खेलते हैं। मुक़ामी सदर जमाअत की दरख़ास्त पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह-ए-शफ़क़त दोनों नक़्शों पर अपने दस्तख़त फ़रमाए। बासकिट बाल पर भी अपने दस्तख़त फ़रमाए और मीनारों की तामीर के लिए दोनों

ईंटों पर अपनी "الیس اللہ بکاف عبدہٗ" वाली अँगूठी छू करके दुआ की। इसके बाद हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए दफ़्तर तशरीफ़ ले गए।

इस दौरान मुक़ामी अहबाब हाल में बैठ चुके थे और महिलाएं एक दूसरे हाल में जमा हो चुकी थीं। 7:30 बजे हुज़ूर अनवर हाल में तशरीफ़ लाए, हाल के दरवाज़ा पर एक मुक़ामी अमरीकन ख़ातून अपने ख़ावंद और बच्चों के साथ खड़ी थीं। वह इस शहर की ज़ोनिंग अफ़्सर हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मिलने के लिए आई थीं। हुज़ूर अनवर अज़राह-ए-शफ़क़त कुछ देर के लिए उनके पास खड़े हुए और गुफ़्तगु फ़रमाई।

इजतेमाई मुलाक़ात जमाअत फोर्ट वरथ

इसके बाद प्रोग्राम शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अहबाब से दरयाफ़त फ़रमाया यहां कितने असायलम सीकरज़ हैं, हाथ खड़ा करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क्या सबने काम शुरू कर दिया है। जिस पर सभी ने कहा कि हमने काम शुरू कर दिया है। फिर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके दिल यहां लग गए हैं। अगर नहीं लगे तो लगाने पड़ेंगे।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जो लोग मुझे मिल चुके हैं वह हाथ खड़ा करें। इस पर अहबाब ने अपने हाथ खड़े किए तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। असायलम सीकरज़ में से अधिक संख्या है जो मुझे मिल चुकी है।

इसके बाद सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ जो सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक़्फ़-ए-आरिज़ी भी हैं ने अपना परिचय करवाया। हुज़ूर अनवर ने उनसे दरयाफ़त फ़रमाया कि यहां आपकी मुक़ामी जमाअत में कितने वाक़िफ़-ए-नौ बच्चे हैं। क्या संख्या है? उन्हों ने बताया कि दस बच्चे हैं और जो लड़कियां हैं उनके प्रोग्राम इत्यादि लजना करती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि चाहे लजना प्रोग्राम करती हो। लेकिन रिकार्ड आपके पास बहैसियत सैक्रेटरी होना चाहिए। इस पर उन्हों ने बताया कि बच्चियों की संख्या 13 है। इस तरह कुल 23 हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप तालीमुल क़ुरआन वाकफ़े आरिज़ी के सैक्रेटरी भी हैं। वक़्फ़-ए-आरिज़ी के प्रोग्राम भी बनाएँ। तब्लीग़ करें, लिटरेचर दें, बाहर निकलें, लोगों से राबते करें और यहां अपने मर्कज़ आने की दावत दें। प्रत्येक महीने में विभिन्न जगहों से पंद्रह बीस लोग मिल जाऐंगे तो पूरे इलाक़े में इस्लाम का परिचय करवा सकते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो जो वसायल यहां मुहय्या हैं उनको प्रयोग करते हुए जो जो काम हो सकता है आप लोगों को करना चाहिए।

इसके बाद सैक्रेटरी तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि तब्लीग़ का प्लान क्या है। इस पर उन्हों ने अर्ज़ किया कि हमने हफ़्ता-वार प्रोग्राम शुरू किए हुए हैं। बाहर से मेहमान अपने सैंटर में बुलाते हैं और उन से बातचीत करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो आपके यहां हम-साए हैं उनको भी बुलाऐं, ब्रोशर, लीफ़ लेट्स तक़सीम करने का प्रोग्राम बनाएँ। अपने शहर की आबादी का जायज़ा लें। कितनी आबादी है, कौन कौन से लोग यहां रहते हैं। वाईट अमरीकन, अफ्रीकन अमरीकन, एशीयन, लातीनी अमरीकन, ये कितनी कितनी संख्या में आबाद हैं? पहले सारा जायज़ा लें और एक ethnic ग्रुप के हिसाब से अपना तब्लीग़ी प्लान बनाएँ।

सैक्रेटरी तर्बीयत ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि मुझे यह परेशानी है कि लोगों को मस्जिद लाने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ रही है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया नियमित मेहनत करनी पड़ेगी। जो नहीं आ रहे उनको रोज़ाना याददेहानी करवाईं।

इसके बाद सदर साहिब जमाअत फोर्ट वरथ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का शुक्रिया अदा किया कि हुज़ूर अनवर की आमद के साथ आज हमें यह दिन देखने को मिला है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि शुक्रिया तब होगा जब मस्जिद को आबाद करेंगे। हुज़ूर अनवर के इस्तफ़सार पर सदर साहिब ने बताया कि मस्जिद से पंद्रह मिनट तक के फ़ासले पर तीस चालीस फ़ीसद अहमदी आबाद हैं। हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि फ़ज्र और मग़रिब इशा पर हाज़िरी पच्चास फ़ीसद होनी चाहिए और यह कम से कम टार्गेट रखें और इस को बढ़ाते चले जाएं। वैसे तो सो फ़ीसद होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पैट्रोल मस्जिद आने के लिए रखें और बाक़ी अपनी शॉपिंग के लिए, ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त के लिए पैदल जाएं।

महिलाएं की तरफ़ से एक ग़ैरमुल्की ख़ातून ने सवाल किया कि औरतों के विशेष अय्याम में नमाज़, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत इत्यादि के बारह में क्या हुक्म है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ये तो महिदूद दिन हैं, उनमें नमाज़ नहीं पढ़ी जातीं और न तिलावत क़ुरआन की जाती है, लेकिन खुदा का ज़िकर कर सकते हैं, दुआएं कर सकते हैं, हदीस में दुआएं हैं, कर सकते हैं। ख़ुदा तआला को याद रख सकती हैं।

हुज़ूर अनवर के इस्तफ़सार पर सदर साहिबा लजना मज्लिस फोर्ट विरथ ने बताया कि यहां महिलाओं की तजनीद 70 है और उनमें अधिक संख्या मुस्तइद और फ़आल है जबकि एक हिस्सा फ़आल नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप औरतों की तर्बीयत का प्रोग्राम ऐसा बनाएँ कि वे आगे अपने बच्चों की तर्बीयत कर सकें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अलगर्ज की आमिला active हो जाएगी तो मस्जिद में आने वालों की हाज़िरी बढ़ सकती है। अपने मर्दों को मस्जिद भेजें। इसी तरह मुक़ामी जमाअत की आमिला के मैंबरान, ख़ुद्दाम, अंसार की आमिला के मैंबरान active हों और बाक़ायदा नमाज़ों पर आने वाले हों तो मस्जिद की हाज़िरी बहुत बढ़ जाएगी।

इसके बाद मुक़ामी जमाअत की मज्लिस-ए-आमला ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने की सआदत पाई। मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया और मज्लिस अंसारुल्लाह की आमिला ने भी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का शरफ़ पाया।

एक दोस्त फ़राज़ अहमद साहिब ने मस्जिद और इस कम्पलैक्स की renovation में बहुत अधिक ख़िदमात सरअंजाम दी है और सारा काम बिना पैसे दिए है। उनको भी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का शरफ़ नसीब हुआ।

यह प्रोग्राम 7 बजकर 50 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना हाल में तशरीफ़ ले गए। जहां महिलाएं शरफ़ ज़यारत से फ़ैज़याब हुईं। 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैतुल क़य्यूम" तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद अब यहां से वापस डेलास (dallas) के लिए रवानगी का प्रोग्राम था।

"मस्जिद बैतुल क़य्यूम" और इस सारे कम्पलैक्स को रंग-बिरंगी रौशनियों से सजाया गया था। बहुत ही ख़ूबसूरत मंज़र था। इन रौशनियों की वजह से मस्जिद के इर्दगिर्द का सारा इलाक़ा रोशन था और सारे माहौल में एक ख़ुशी का समां था। 8 बजकर 20 मिनट पर यहां से डेलास के लिए रवानगी हुई।

पुलिस की गाडियों ने क़ाफ़िला को escort किया और जगह जगह दूसरी गाडियों को रोक कर रास्ता क्लीयर करते रहे। क़रीबन एक घंटा के सफ़र के बाद 9 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैतुल इकराम डेलास आमद हुई। मस्जिद के बैरूनी अहाता में अहबाब जमाअत मर्दो महिलाएं हुज़ूर अनवर के वापस आने के इंतेज़ार में खड़े थे। इन सभी ने अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए। ज़ूर अनवर अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

शेष आगे ..

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया,अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित
चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात
जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (9) सफ़र ख़र्च कादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

★ ★ ★

ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई/ख़ादिम मस्जिद के लिए शर्ते

विभाग सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद कादियान

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है। (3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे। (6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल कादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को कादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) कादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

रिपोर्ट तर्बियती जलसा

तिथि 14 अक्टूबर 2022 को नमाज़-ए-जुमा के बाद अहमदिया मस्जिद सालेहनगर आगरा, यू . पी में विनीति की सदारत में एक तर्बियती जलसा सीरतुन्नबी आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो कि श्रीमान सरफ़राज़ अहमद साहब ने पढ़ी। इसके पश्चात रिज़वान अहमद साहब ने नज़्म पढ़ी। इसके पश्चात श्रीमान मुदससिर अहमद साहब ने प्रथम तकरीर की अंत में विनीत ने सीरतुन्नबी के विषय पर भाषण दिया। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

सय्यद आफ़ाक अहमद

मुअल्लिम इसलाह व इरशाद आगरा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 01 -08 June 2023 Issue No. 22-23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अह-मदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

पृष्ठ 1 का शेष

लुल्लाह अगर बस्ती वाले न दें। फ़रमाया छीन कर भी ले सकते हो। (अबू दाऊद भाग तीन किताब ततिम्मा मा जा आ फ़ील ज़याफ़त) यह हुक्म उस वक़्त के लिए है जब इस्लामी तमद्दुन जारी हो क्योंकि उन दिनों में दूसरे लोग इस से ज़याफ़त का हक़ ले सकेंगे। इस हुक्म को अगर दुनिया में जारी किया जाए तो बहुत सी ख़राबियां जो होटलों और सराओं की वजह से पैदा हुई हैं दुनिया से दूर हो जाएं और गरीबों के लिए भी दुनिया का सफ़र जो आला तर्बीयत का एक माध्यम है आसान हो जाए परंतु अफ़सोस कि खूद मुसलमानों ने भी इस हुक्म को भुलाया है।

मुसाफ़िरों से हुस्न-ए-सुलूक का यह आम हुक्म दुनिया से बहुत से फ़ित्ने मिटाने का मोजिब है क्योंकि लड़ाई झगड़ा मुनाफ़िरत से पैदा होता है। अगर इस तरह मेहमान--नवाज़ी का रिवाज हो तो मुनाफ़िरत दूर हो जाए और गांव और मुल्कों के झगड़े मिट जाएं। वे लोग जो किसी दूसरे मालिक की मेहमान-नवाज़ी से फ़ायदा उठा चुके हों कभी भी जल्दी से उनके ख़िलाफ़ लड़ने पर आमादा न होंगे सिवाए ख़बीस स्वभाव वालों के जो निसबतन थोड़े होते हैं। तथा इस हुक्म से गांव और कस्बों के निज़ाम की बुनियाद भी पड़ती है क्योंकि मेहमान-नवाज़ी सारे गांव पर वाजिब की गई है। अतः इस हुक्म को पूरा करने के लिए प्रत्येक गांव वाले एक ऐसे निज़ाम की पाबंदी पर मजबूर होंगे जिसके अधीन सारा गांव मेहमानों की ख़िदमत कर सके और यह निज़ाम उनके दूसरे कामों में भी मुफ़ीद साबित होगा।

لَا تُبَذِّرْ फिर फ़रमाया कि ऊपर के अहकाम में माल को ख़र्च करने की जो नसीहत की गई है इसका यह मतलब नहीं समझना कि माल को लुटा देना चाहिए हमने उन्ही अख़राजात का हुक्म दिया है जो ज़रूरी हैं। बेफ़ायदा माल लुटाने का हुक्म नहीं दिया।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 323 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर (लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad